BA III year - VI Paper
विषय - काव्यशास्त्र

हिन्दी विभाग
डॉ गीता कुमारी
काव्य हेतु

7. 10. 2020
11.45 to 12.30

आचार्यों के विभिन्न मत है काव्य हेतु पर

1. आचार्य भामह का मत - आचार्य भामह ने अपने ग्रन्थ काव्यालंकार में स्वीकार किया है कि गुरु के उपदेश से जड़ बुद्धि भी शास्त्र अध्ययन करने में समर्थ हो सकता है, किन्तु काव्य तो किसी प्रतिभाशाली द्वारा ही रचा जा सकता है।

गुरु देशादध्येतुं शास्त्रं जडधियोऽप्यलम् काव्यं तु जायते जातु कस्यचित् प्रतिभावत: ॥

निश्चय ही भामह 'प्रतिभा' को काव्य का प्रधान हेतु स्वीकार करते है, किन्तु एक अन्य श्लोक में वे स्वीकार करते हैं कि शब्दशास्त्र को जानने वालों की सेवा और उपासना करके, शब्द का तथा शब्दार्थ का ज्ञान करके तथा अन्य कवियों के कृतित्व का अध्ययन करके ही काव्य रचना में प्रवृत्त होना चाहिए।

स्पष्ट है कि भामह प्रतिभा के साथ-साथ व्युत्पत्ति (शास्त्र ज्ञान) एवं अभ्यास को भी काव्य हेतुओं में स्थान देने के पक्षधर है।

Scanned with CamScanner

आचार्य दण्डी का मत – आचार्य दण्डी ने अपने ग्रन्थ काव्यादर्श में प्रतिभा, आनन्द अभियोग (अभ्यास) और लोकव्यवहार एवं शास्त्रज्ञान को काव्य हेतुओं के रूप में मान्यता दी है उनके अनुसार

नैसर्गिकी च प्रतिभा श्रुतं च बहु निर्मलम्।
आनन्दाश्चयाभियोगो अस्या: कारणं काव्य सम्पदा॥

अर्थात् नैसर्गिक प्रतिभा, निर्मल शास्त्रज्ञान और बढ़ा-चढ़ा कर अभ्यास काव्य सम्पत्ति में कारण होते हैं। नैसर्गिक प्रतिभा से उनका तात्पर्य जन्मजात प्रतिभा से है जो ईश्वर प्रदत्त होती है। इस प्रतिभा को अर्जित नहीं किया जा सकता। प्रतिभा के अभाव में निम्न कोटि की काव्य रचना निरन्तर अभ्यास एवं शास्त्रज्ञान से हो सकती है।

आचार्य वामन का मत – आचार्य वामन ने अपने ग्रन्थ काव्यालंकार सूत्रवृत्ति में प्रतिभा को जन्मजात गुण मानते हुए इसे प्रमुख काव्य हेतु स्वीकार किया है:

We judge ourselves by what we feel capable of doing, while others judge us by what we have already done.

Notes

कवित्व बीज प्रतिभानं कवित्वस्य बीजम्

वे लोक व्यवहार, शास्त्रज्ञान, शब्दकोश आदि की जानकारी को भी काव्य हेतुओं में स्थान देते हैं। एक अन्य स्थान पर वे काव्य हेतुओं में प्रतिभा को कवित्व का बीज स्वीकार करते हैं जो जन्म-जन्मान्तर के संस्कार से शक्ति रूप में कवि में विद्यमान होती है। अभियोग वृद्ध सेवा, अवेक्षण अवधान आदि से ही उत्तम काव्य का निर्माण कर सकना सम्भव हो पाता है।

(4) आचार्य रुद्रट का मत - आचार्य रुद्रट ने अपने ग्रन्थ काव्यालंकार में प्रतिभा, व्युत्पत्ति और अभ्यास को काव्य हेतु स्वीकार किया है। प्रतिभा के वे दो भेद मानते हैं - सहजा और उत्पाद्या। सहजा प्रतिभा कवि में जन्मजात होती है और यही काव्य निर्माण का मूल हेतु है जबकि उत्पाद्या प्रतिभा लोकशास्त्र के अभ्यास से उत्पन्न होती है। यह सहजा प्रतिभा को संस्कारित करती है।

5) आचार्य मम्मट का मत – आचार्य मम्मट ने अपने ग्रन्थ काव्यप्रकाश में काव्य हेतुओं पर विचार करते हुए लिखा है।
शक्तिर्निपुणता लोकशास्त्र काव्याद्यवेक्षणात्।
काव्यज्ञशिक्षयाभ्यास इति हेतुस्तदुद्भवे ॥
अर्थात् काव्य के तीन हेतु हैं – शक्ति (प्रतिभा), लोकशास्त्र का अवेक्षण तथा अभ्यास। वे एक अन्य स्थान पर यह भी कहते हैं "शक्तिः कवित्व बीजरूप" अर्थात् शक्ति काव्य का बीज संस्कार है, जिसके अभाव में

काव्य रचना सम्भव ही नहीं है। जिसे अन्य आचार्य प्रतिभा कहते है, उसी को मम्मट ने 'शक्ति' कहा है।

6) हेमचन्द्र – इन्होंने अपने ग्रन्थ शब्दानुशासन में लिखा है "प्रतिभाऽस्य हेतु प्रतिभा नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा"
अर्थात् प्रतिभा काव्य का हेतु है, तथा नवनवोन्मेषशालिनी प्रज्ञा को प्रतिभा कहते हैं।
7 – राजशेखर – प्रतिभा व्युत्पत्ति मिश्रः समवेत

One man can completely change the character of a country and the industry of its people, by dropping a single seed in fertile soil.
Notes

श्रेयसी इति" अर्थात् प्रतिभा और व्युत्पत्ति दोनों समवेत रूप में काव्य के श्रेयस्कर हेतु हैं।
वे प्रतिभा के दो भेद स्वीकारते हैं -
कारयित्री . ② भावयित्री
कारयित्री प्रतिभा जन्मजात होती है तथा इसका संबंध कवि से है। भावयित्री प्रतिभा का संबंध सहृदय पाठक या आलोचक से है।
8. पण्डितराज जगन्नाथ - इन्होंने अपने ग्रन्थ रस गंगाधर में प्रतिभा को ही प्रमुख काव्य हेतु स्वीकार किया है।
"तस्य च कारणं कविगता केवलं प्रतिभा"।